5

उद्धार की परमेश्वर की सनातन मंशा

(2:4–10)

इफिसियों के मसीह को ग्रहण करने से पहले उदास करने वाले जीवन का स्मरण कराने के बाद पौलुस ने सांत्वना का संदेश दिया। उसने मनुष्य के लिए उद्धार के परमेश्वर की अद्‌भुत मंशा को समझाया।

प्रेम की मंशा (2:4)

4परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिस से उस ने हम से प्रेम किया।

आयत 4. यह घोषणा करने के बाद कि पाप में मरे हुए थे और शरीर की लालसाओं में जीवन बिता रहे थे, पौलुस ने उन्हें "परन्तु परमेश्वर में" शब्दों के साथ बड़ी आशा और दिलेरी दी। उसने लिखा, **परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिस से उस ने हम से प्रेम किया।**

परमेश्वर पूरी तरह से पवित्र है। प्राचीन इस्राएल और हमारे लिए उसकी घोषणा यही है कि "मैं पवित्र हूं" (देखें लैव्यव्यवस्था 11:44, 45; 19:2; 20:26; 1 पतरस 1:16)। परमेश्वर पवित्र है जिस कारण वह पाप के साथ सहभागिता नहीं रख सकता (हबक्कूक 1:13); उसके लिए पाप को दण्ड देना आवश्यक है (रोमियों 6:23)। पवित्र परमेश्वर जब पाप का निर्णय करता है तो वह पापी के लिए जिसके वह योग्य होता है न्याय कर रहा होता है। परन्तु परमेश्वर "दया का धनी" है जिस कारण वह न्यायपूर्ण ढंग से अपने निर्णय से अपने क्रोध को रोक लेना चाहता है। अदालत में हो सकता है कि न्याय मण्डली को निर्णय की प्रतिवादी पक्ष अपराध का दोषी है परन्तु इसके बावजूद वह दया की सिफारिश कर देती है। प्रतिवादी दोषी है जिस कारण कानून के अनुसार दण्ड के योग्य है, परन्तु न्याय मण्डली जज को, जिसके वह योग्य है वह फैसला सुनाने से रोक सकती है। परमेश्वर की अदालत में हम दोषी पाए गए हैं और न्याय यह कहता है कि हमें मौत मिलनी चाहिए। परन्तु परमेश्वर हमारे साथ अपनी दया के अनुसार सौदा करना चाहता है। यानी वह जिसके हम हक्कदार हैं उसे रोकना चाहता है। सुनिश्चित होने के लिए परमेश्वर पापी को अपने पाप में ढिठाई से बने रहने और अन्त में अनन्त मृत्यु के न्याय को पाने देगा; परन्तु वह उन पर जो इसे स्वीकार करने के इच्छुक हैं अपनी बड़ी दया दिखाता है।

"परन्तु परमेश्वर" वाक्यांश जिसके किसी समय इफिसुस के लोग योग्य थे और जो वे बन गए थे उन में स्पष्ट अन्तर को दिखाता है। परमेश्वर ने पहल की क्योंकि वह न सिर्फ सच्चाई से क्रोध करने वाला परमेश्वर है बल्कि दया का परमेश्वर भी है। परमेश्वर दया का धनी है इस

कारण उसने अपने लोगों को पाप की उचित मज़दूरी अर्थात अनन्त मृत्यु से बचा लिया है और हमें जीवन दिया है।

''उस बड़े प्रेम के कारण, जिस से उस ने हम से प्रेम किया'' उस कारण को दिखाता है जिससे परमेश्वर ने उन पर जो पाप में मरे हुए थे अपनी दया दिखाई। दया पापियों के प्रति परमेश्वर का व्यवहार है और प्रेम पापियों के लिए उसका इरादा है। पौलुस ने कहा कि परमेश्वर की दया धनवान है और उसका प्रेम बड़ा है। ''के कारण'' *dia* का अनुवाद है और इसका अर्थ है ''संतुष्ट करने के लिए''[1]; परमेश्वर ने अपने बड़े प्रेम को संतुष्ट करने के लिए हम पर दया दिखाई।

यूनानी भाषा में ''प्रेम'' के लिए हमारी भाषा की तरह एक नहीं बल्कि चार शब्द थे। विलियम बार्कले ने इन चारों शब्दों के अर्थ अच्छी तरह समझाए हैं।[2] (1) *Erōs* शब्द मुख्यतया नर नारी के बीच प्रेम अर्थात शारीरिक प्रेम के लिए है। यह शब्द कामुक भावनाओं को शामिल करने के लिए बनाया गया था और नये नियम में यह शब्द नहीं पाया जाता। (2) *Storgē* परिवार के लगाव से जुड़ा शब्द है और इसका इस्तेमाल बच्चों के लिए माता-पिता के या माता पिता के लिए बच्चों के प्रेम के रूप में किया जाता है। यह शब्द रोमियों 12:10 में विशेषण रूप में मिलता है जिसका अर्थ ''समर्पित'' (''सनेह''; KJV)। (3) *Philia* पति और पत्नी के बीच प्रेम और मित्रों के बीच प्रेम की बात करता हुआ शब्द है। इसका इस्तेमाल पिता, ''माता, पिता, पुत्र और पुत्री के साथ-साथ (10:37), लाज़र के लिए (यूहन्ना 11:3, 36) और यूहन्ना के लिए (यूहन्ना 20:2) यीशु के प्रेम के विवरण के लिए किया गया है। (4) नये नियम में अनुवाद होने वाला सबसे आम शब्द ''प्रेम'' *agapē* है। यह शब्द प्राचीन यूनानी भाषा में आम नहीं था परन्तु नये नियम में यह ''प्रेम'' के लिए मुख्य शब्द बन गया।

नये नियम में *अगापे* शब्द अपने संज्ञा और क्रिया रूप में 250 से अधिक बार आता है। यह ''प्रेम'' के लिए सबसे महत्वपूर्ण शब्द है, क्योंकि प्रेम की नये नियम की अवधारणा को समझने के लिए पर्याप्त रूप में बड़ा शब्द केवल यही है। केवल *अगापे* ही उसे व्यक्त कर सकता है जिसे परमेश्वर देना चाहता था। ''प्रेम'' के लिए अन्य शब्दों में अनचाही भावनाएं या मनोवेग व्यक्त करते हैं, जैसा ''प्रेम में पड़ना'' या अपने बच्चे के लिए माता का स्वाभाविक प्रेम, परन्तु *अगापे* में इच्छा पाई जाती है। यह परिणाम जानबूझकर लिए गए निर्णय का परिणाम अर्थात वह सोच है जो व्यक्ति को किसी दूसरे से प्रेम करने देती और चाहे जो भी हो जाए उसका भला चाहती है। *Agapē* ''अजय परोपकार और अभेद्य सदभाव'' है।[3] नया नियम बताता है कि मनुष्य के लिए परमेश्वर का यह प्रेम विश्वव्यापी और बलिदानपूर्ण (यूहन्ना 3:16), जिसके कोई योग्य न हो (रोमियों 5:8), बचाने वाला और पवित्र करने वाला है (2 थिस्सलुनीकियों 2:13)। इफिसियों 2:4 में इसे करुणामय प्रेम के रूप में दिखाया गया है। *Agapē* उस सब के लिए जो परमेश्वर ने पापियों के लिए किया है प्रेरणा है।

जीवन की मंशा (2:5)

5जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है)।

आयत 5. अगली आयतों में पौलुस ने और खोलकर बताया कि वह अनुग्रहकारी और करुणामय प्रेम जो परमेश्वर का लोगों के लिए है वह क्या है। पौलुस ने आयत 1 में बताई गई आत्मिक मृत्यु की स्थिति पर ज़ोर दिया और कहा कि पापी लोग [अपने] **अपराधों के कारण** मरे हुए हैं। ऐसे पापियों के लिए परमेश्वर ने अपनी करुणा और प्रेम दिखाया है। वही यूनानी शब्द *paraptōma* जिसका अनुवाद ''अपराधों'' हुआ है आयत 1 में उसका अनुवाद ''अपराधों'' हुआ है। **जब हम मरे हुए थे** दिखाता है कि परमेश्वर ने हम से कितना प्रेम किया और सब पापियों पर दया दिखाई। पापियों को जो अभी भी अपनी पापपूर्ण स्थिति में थे बचाने के लिए काम करके परमेश्वर ने हर आवश्यक बात की।

उसने इन पापियों के साथ क्या किया? उसने **हमें मसीह के साथ जिलाया**। परमेश्वर ने हमें मसीह में आत्मिक जीवन दिया। यदि आत्मिक मृत्यु परमेश्वर से अलग होना है (देखें 2:1), तो आत्मिक जीवन परमेश्वर से मिलाप है। मसीह बड़ा मिलाप कराने वाला है। पौलुस ने कहा कि ''मसीह का लहू'' (2:13), अर्थात मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने से मसीह के लिए हमें परमेश्वर से ''मिलाना'' सम्भव हुआ (2:16)। हम इसे तब ग्रहण करते हैं जब हम पाप के लिए मरते अर्थात मसीह में बपतिस्मा लेते और जीवन के नयेपन में चलने के लिए जी उठते हैं (रोमियों 6:1-4)। मसीही लोगों को मसीह की मृत्यु और उसके पुनरुत्थान में उसके साथ मिलाया जाता है। इस प्रकार से हमें नया जीवन मिलता है। गलातियों 2:20 में पौलुस ने इसी विचार को पकड़ा, जब उसने कहा, ''मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है।'' मसीह की मृत्यु में उसके साथ हमारी पहचान हमारे अन्दर के पाप की सामर्थ पर ज़ोर देती है। उसके पुनरुत्थान के साथ हमारी पहचान से ईश्वरीय जीवन मिलता है।[4]

मनुष्य जाति के लिए परमेश्वर के महान प्रेम के कारण वह पापियों को अपने साथ मिलाता और हमें आत्मिक जीवन देता है। 2 कुरिन्थियों 5:17, 18 में पौलुस ने इसे इस प्रकार कहा है: ''इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है; ... ये सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया, ...।''

कुलुस्सियों 2:12, 13 में यह बताते हुए कि कुलुस्से के लोगों को उनके अपराधों की मृत्यु से जिलाया गया था, पौलुस ने इस विचार को और विस्तार से बताया; परमेश्वर ने उन्हें बपतिस्मा लेने के समय क्षमा कर दिया। पाप से आत्मिक मृत्यु आई, जबकि आज्ञा पालन से क्षमा, मेल मिलाप और जीवन मिला। दया की प्रेरणा से परमेश्वर के बड़े प्रेम के कारण ये सब सम्भव हो सका।

परमेश्वर की दया और प्रेम उसके **अनुग्रह** के कारण हुआ। यूनानी भाषा में ''अनुग्रह'' शब्द का लिए संज्ञा शब्द *charis* है जिसका अर्थ है ''बिना कमाई और अनार्जित कृपा'' जिससे क्षमा के लिए आनन्द और धन्यवाद होता है।[5] ''अनुग्रह'' उद्धार में ईश्वरीय पहल की बात करता है। उद्धार हमें इसलिए नहीं दिया जाता कि हम अच्छे हैं या हमारे काम अच्छे हैं, बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह के कारण दिया जाता है। यदि उद्धार को कमाया जा सकता, हक जताया जा सकता, तो यह अनुग्रह से नहीं होना था। बहुत से लोगों के लिए बिना चरमों तक जाए यह समझना कठिन है। कई तो यह कहेंगे कि यदि उद्धार अनुग्रह से होता है तो हमें उद्धार पाने के

लिए इसकी आवश्यकता नहीं है। परन्तु बाइबल ऐसा कभी नहीं कहती। अन्य यह कहेंगे कि हमें उद्धार पाने के लिए इतने भले काम करने चाहिए कि हम उद्धार पास सकें। स्पष्टतया उन्हें लगता है कि हमारा उद्धार केवल तभी हो सकता है, जब हमारे भले काम हमारे बुरे कामों से अधिक हों। यह विचार न तो परमेश्वर के अनुग्रह को समझता है और न ही मानता है। यह मानता है कि एक भी पाप हमें परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध को कमाने के लिए अयोग्य बना देता है। बाद में आयतें 8 और 9 में पौलुस ने समझाया कि हम परमेश्वर के अनुग्रह का जवाब कैसे दें।

उद्धार हुआ है यूनानी भाषा में सम्पूर्ण कर्मवाच्य कृदंत है; यह संकेत देता है यानी यह अतीत में हुए किसी कार्य के परिणाम का संकेत देता है जिसका फल भविष्य के साथ-साथ वर्तमान में भी मिलता है। यहां पर कर्मवाच्य का उपयोग यह दिखाता है कि उद्धार हमारे लिए किया गया कुछ काम है न कि वह जिसे हम अपने आप कर सकते हैं। हम परमेश्वर पर निर्भर हैं। इस संदर्भ में पौलुस ने भूत, वर्तमान और भविष्य के उद्धार की बात की। उसने कहा कि हमें उद्धार मिला है (भूत), हम आत्मिक क्षेत्र में मसीह के साथ बैठे हैं (वर्तमान) और आने वाले युगों तक हम परमेश्वर की दया के पात्र होंगे (भविष्य)। कालांतर में मसीही व्यक्ति को धर्मी ठहराया गया था, वर्तमान में वह मसीह के समरूप में बढ़ रहा है और भविष्य में उसे महिमा दी जाएगी।

विरासत की मंशा (2:6-10)

6और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया। 7कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आने वाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए। 8क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यही तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है। 9और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे। 10क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिए तैयार किया।

आयत 6. हमें उद्धार उनलब्ध करने के अलावा परमेश्वर ने हमारे लिए एक समृद्ध और तेजस्वी विरासत तैयार की है (देखें 1:18)।

परमेश्वर ने मसीही लोगों को ''मसीह के साथ जिलाया'' (2:5) **और उसके साथ उठाया**। रोमियों 6:1-18 में पौलुस ने इस अवधारणा को कुछ विस्तार से बताया। (1) उसने बताया कि मसीही व्यक्ति पाप के लिए मर गया है, जैसा कि इस तथ्य से संकेत दिया गया कि बपतिस्मे में मसीह के साथ उसे दफ़ना दिया गया है और नया जीवन जीने के लिए जी उठा है। (2) मसीही व्यक्ति मसीह के साथ मर गया है और अब वह पाप का दास नहीं है। (3) मसीही व्यक्ति अपने आपको पाप के लिए मरा हुआ और परमेश्वर के लिए जीवित मानता है। (4) मसीही व्यक्ति अपने आपको परमेश्वर के सामने इस प्रकार से उस व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है जो आत्मिक रूप में जी उठा है। (5) मसीही व्यक्ति को उस मृत्यु से छुड़ा लिया गया है जो पाप के कारण हुई थी और अब वह धार्मिकता का दास बनने के लिए जीवित है क्योंकि वह ''मन से उस उपदेश का मानने वाला'' हो गया जो उसे दिया गया था (रोमियों 6:17)।

रोम में मसीही लोगों को दी गई शिक्षा या डॉक्ट्रिन वही सच्चाई थी, जिसका प्रचार पौलुस हर जगह करता था: "... कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया। और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा" (1 कुरिन्थियों 15:3, 4)। यह डॉक्ट्रिन या शिक्षा वह सांचा या नमूना था जिसमें उन्हें ढाला गया था। जैसे मसीह हमारे पापों के लिए मर गया, वैसे ही रोमी लोग पाप के लिए मर गए थे। जैसे मसीह को दफ़ना दिया गया था, वैसे ही रोमियों को बपतिस्मे में मसीह के साथ दफ़ना दिया गया था। जैसे मसीह जी उठा था वैसे ही रोमियों को नये जीवन के लिए जिला दिया गया था (रोमियों 6:1-6)। कहने का मतलब यह कि वे मसीह के साथ जिलाए गए थे।

कुलुस्सियों 2:12 और 3:1 में पौलुस ने उसी विचार को पकड़ा जब उसने कुलुस्सियों को "उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े" और "उसी में परमेश्वर की सामर्थ पर विश्वास करके जी भी उठे" के रूप में दिखाया। बपतिस्मे के समय उन्होंने अपने विश्वास को दिखाया था कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार काम करेगा कि "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा" (मरकुस 16:16)। पौलुस ने कुलुस्से के लोगों को जो मसीह के साथ जिलाए गए थे "स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में" रहने को कहा "जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दहिनी ओर बैठा है" (कुलुस्सियों 3:1)।

इन अन्य मसीही लोगों की तरह ही बपतिस्मे से इफिसुस के लोग **मसीह यीशु में** आए थे। उन्हें आत्मिक क्षेत्र में **स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ** बिठाने के लिए जिलाया गया था (देखें 1:3)। "स्वर्गीय स्थानों" का हवाला यह स्मरण दिलाने के लिए था कि चाहे वे पहले से मसीह में थे और उन्हें उनके पापों से बचा लिया गया था, परन्तु अभी काम बाकी था और युद्ध अभी लड़ना बाकी था। कलीसिया को आज भी इस स्वर्गीय, आत्मिक क्षेत्र में सुसमाचार को बताने का काम है (3:10) और बुराई के विरुद्ध आत्मिक लड़ाई आज भी स्वर्गीय स्थानों में मिलती है (6:10-12)।

आयत 7. पौलुस के अनुसार परमेश्वर ने अपने पवित्र लोगों का उद्धार किया और उन्हें जिलाया **कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आने वाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए** (2:7)। निश्चय ही उद्धार मनुष्य जाति की भलाई के लिए है परन्तु यह परमेश्वर की महिमा के लिए भी है (1:6, 12, 14)। इसके अलावा पौलुस ने कहा कि मनुष्य जाति के उद्धार से परमेश्वर "दिखा" सकेगा कि वह उद्धार पाने वालों के लिए अपनी दया में कितना उसका अनुग्रह कितना धनवान है। "आने वाले समयों में" मसीह के द्वितीय आगमन, मरे हुओं के पुनरुत्थान और न्याय से आरम्भ होने वाले समय के आगे के के लिए है। समय के अन्त में परमेश्वर जब सब लोगों को उसके सामने लाएगा तो वह उनके सामने और स्वर्गदूतों की स्वर्गीय सेना के सामने मसीह यीशु में पवित्र लोगों के प्रति अपने अनुग्रह और दया को दिखाएगा।

पौलुस ने केवल परमेश्वर के अनुग्रह ही की नहीं बल्कि "उसके अनुग्रह के असीम धन" की भी बात की। (*huperballō,* "असीम") का वर्तमान कृदंत 2 कुरिन्थियों 9:14 में भी परमेश्वर के अनुग्रह का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल हुआ है। इफिसियों में और कहीं परमेश्वर ने उसकी सामर्थ और मसीह के प्रेम के वर्णन के लिए इसी शब्द के रूपों का इस्तेमाल किया (1:19; 3:19)।

> इस अन्तिम हवाले के सम्बन्ध में और 1:19-21 और 2:4-7 के बीच समानताओं के प्रकाश में ..., कहा जा सकता है कि यदि स्वर्गीय स्थानों में बैठने के लिए मृत्यु मसीह का जी उठना परमेश्वर की असीम सामर्थ का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था, तो स्वर्गीय स्थानों में मसीह के साथ बैठने के लिए आत्मिक मृत्यु से विश्वासियों का जी उठना परमेश्वर के असीम अनुग्रह का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है।[6]

2:4-7 से कम से कम तीन निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं (1) मसीह को जिलाया गया है और परमेश्वर के दाहिने हाथ ऊंचा किया गया है और मसीही व्यक्ति को सुसमाचार के आज्ञापालन में आत्मिक क्षेत्र में मसीह के साथ बैठने के लिए जिलाया गया है। (2) मसीह के महिमा पाने और उसके साथ मसीही व्यक्ति के सम्बन्ध के तथ्य के भविष्य में होने वाले प्रभाव हैं। (3) विश्वासी व्यक्ति के लिए जो कुछ परमेश्वर से प्राप्त किया है उसका पूरी तरह से प्रदर्शन मसीही युग के आरम्भ तक प्रकट नहीं होगा, जब मसीह प्रकट होगा और जब हम महिमा में उसके साथ प्रकट होंगे (देखें कुलुस्सियों 3:4)।

पापियों के प्रति परमेश्वर की कृपालु स्थिति के वर्णन के लिए पौलुस ने पहले ही ''दया,'' ''प्रेम,'' और ''अनुग्रह'' का इस्तेमाल किया था (2:4-7)। आयत 7 में इन शब्दों के साथ उस ने ''कृपा'' (*chrēstotēs*) शब्द जोड़ दिया जो मनुष्य जाति की अकृतज्ञता को बावजूद परमेश्वर के अपने लोगों की परोपकारी चिंता और सक्रिय भलाई का संकेत देता है।[7]

आयत 8. क्योंकि *gar* का अनुवाद है और पौलुस द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह के असीम धन के सम्बन्ध में पौलुस की अभी अभी लिखी गई बात के साथ जुड़ता है। उसने अभी अभी कहा था कि इफिसुस के लोगों का उद्धार अनुग्रह से हुआ था (2:5) और इससे मनुष्य के विश्वास के सम्बन्ध में परमेश्वर के अनुग्रह पर उसके ज़ोर का परिचय मिल गया।

प्रेरित की पुष्टि कि **अनुग्रह** से **उद्धार हुआ** होना इस बात का सुझाव नहीं है कि अनुग्रह को पाने की आवश्यकता नहीं। कहा जा सकता है कि वे सब बातें जो उद्धार से सम्बन्धित हैं सभी बातें परमेश्वर के अनुग्रह ही से आती हैं, पर नया नियम कहीं पर भी यह शिक्षा नहीं देता है कि व्यक्ति का उद्धार *किसी भी प्रकार* केवल अनुग्रह से होता है। उद्धार उस सब का जोड़ जो परमेश्वर ने मनुष्य जाति को उद्धार दिलाने के लिए किया है। परमेश्वर का यह अनुग्रह ''सब मनुष्यों पर प्रकट है'' (तीतुस 2:11)। तो फिर सबका उद्धार क्यों नहीं होता? सीधा सा उत्तर है कि सभी लोग सही ढंग से यानी **विश्वास के द्वारा** परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त नहीं करते। 2 कुरिन्थियों 6:1 पौलुस ने चेताया कि कोई ''परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ जाने'' दे सकता है। एक और जहां मनुष्य के उद्धार में ''अनुग्रह'' परमेश्वर के योगदान का सार है, वहीं दूसरी ओर ''विश्वास'' परमेश्वर को मनुष्य के ऊपर का सार है। नया नियम आम तौर पर व्यक्ति के परमेश्वर को सम्पूर्ण उत्तर को मिलाने के लिए सामान्य या व्यापाक अर्थ में ''विश्वास'' या ''प्रतीति'' होने के विचार की तस्वीर दिखाता है (देखें यूहन्ना 3:16; रोमियों 1:16; 5:1)। इसके इलावा ''विश्वास'' और ''प्रतीति'' शब्द भी नये नियम में परमेश्वर को दिए जाने वाले कई उत्तरों में से एक के विशेष ढंग में इस्तेमाल किए गए हैं (देखें मरकुस 16:16; प्रेरितों 18:8)। प्रेरितों 16:25-34 में लूका ने फिलिप्पी में दारोगे की बातचीत को लिखा है। दारोगे ने

जब पौलुस से पूछा कि ''उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूं?'' तो उसे बताया गया कि ''प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर'' (आयतें 30, 31)। फिर पौलुस ने उसे ''प्रभु का वचन सुनाया'' और उसने और उसके घर के लोगों ने बपतिस्मा लिया (आयतें 32, 33)। बपतिस्मा लेने के बाद उस दारोगे ने ''परमेश्वर पर विश्वास करके आनन्द किया'' (आयत 34)। इस विवरण से पता चलता है कि विश्वास में आज्ञापालन भी था।

प्रसिद्ध विचार है कि मसीह को विश्वास का उत्तर ''केवल विश्वास'' का उत्तर है, परन्तु नया नियम कभी नहीं कहता कि ऐसा है। सच तो यह है कि नये नियम में ''केवल विश्वास से'' एक बार मिलता है और इसके आगे ''नहीं'' है (याकूब 2:24)।

''विश्वास,'' ''प्रतीति,'' ''यकीन'' के लिए यूनानी शब्द एक ही शब्द से निकले हैं। इसका क्रिया रूप *pisteuō* है और इसे *''पूरी तरह से यकीन की गई स्वीकृति''* या *''पूरी तरह से यकीन द्वारा और पक्का भरोसा''* हो सकती है।[8] विश्वास की अवधारणा में ''यकीन ... भरोसा ... आज्ञापालन'' शामिल है।[9] बाइबली विश्वास का स्वभाव व्यापक है। पुराने और नये दोनों नियमों में परमेश्वर द्वारा स्वीकृत विश्वास में यकीन, भरोसा और आज्ञाकारिता की तीनों बातें हैं।

आज्ञाकारी विश्वास के आवश्यक होने के बावजूद हम अपना उद्धार नहीं करते हैं। पौलुस ने आगे कहा, **और यह तुम्हारी ओर से नहीं वरन परमेश्वर का दान है**। ''यह'' जो *touto* का अनुवाद है, उद्धार की सारी प्रक्रिया के लिए है। परमेश्वर के अनुग्रह से उद्धार सम्भव हुआ, और मनुष्य का विश्वास वह माध्यम है जिसके द्वारा उद्धार को ग्रहण किया जाता है। तो फिर उद्धार मानवीय प्राप्ति नहीं बल्कि मनुष्य को ''दान'' के रूप में मिलता है। उद्धार चाहे परमेश्वर का ''दान'' है, पर जो लोग यह दावा करते हैं कि उद्धार पाने की प्रक्रिया में योगदान देने के लिए मनुष्य *कुछ नहीं* करता है उन्हें ध्यान देना चाहिए कि जब तक व्यक्ति दान को ग्रहण नहीं करता तब तक उसे उसका लाभ नहीं मिलता। उद्धार के परमेश्वर के दान की पेशकश अनुग्रह से की जाती है परन्तु इसे ग्रहण विश्वास से किया जाता है। यदि कोई मानवीय पिता विरासत के रूप में अपने बच्चे को कोई दान देने की पेशकश करे तो बच्चे को इसका लाभ पाने के लिए उस दान को स्वीकार करना आवश्यक है।

आयत 9. यह बात इस बात पर और ज़ोर देती है कि उद्धार अनुग्रह का एक दान है, **न कि** मनुष्य के प्रयास **के कारण**। कुछ लोग दावा करते हैं कि विश्वास करना, भरोसा करना, आज्ञाकारी विश्वास मनुष्य का प्रयास है इस कारण यह उद्धार के लिए आवश्यक नहीं है। इसके उलट विश्वास में अपने ''कर्म'' होते हैं। जब पौलुस ने कहा, ''न कर्मों के'' तो वह गुणों के कामों की बात कर रहा था और कोई उद्धार को कमा नहीं सकता। यदि कोई उद्धार को कमा सकता होता तो वह अपनी प्राप्तियों के लिए परमेश्वर के सामने **घमण्ड** कर सकता था और उद्धार को उसको लौटाए हुए कर्ज के रूप में होने का दावा कर सकता था। पौलुस ने कहा कि घमण्ड करने वाली कोई बात नहीं है। कर्मों के द्वारा उद्धार नहीं पाया जा सकता। परन्तु विश्वास की अभिव्यक्ति के कार्य हमेशा आवश्यक होते हैं। याकूब ने जब कहा कि ''विश्वास यदि कर्मसहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है'' (याकूब 2:17), तो उसके मन में यही था। यह कहते हुए कि ''तू अपना विश्वास मुझे कर्म बिना तो दिखा'' (2:18)। उसने एक ऐसी चुनौती दी, जिसका सामना नहीं किया जा सकता। कोई विश्वास की बात कर सकता है, पर यदि

वह विश्वास को **दिखा दे,** तो इसे कर्मों के द्वारा अर्थात उसके कामों से ही देखा जाएगा। जब कोई सुसमाचार के आज्ञापालन के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह से उद्धार की पेशकश को स्वीकार करता है तो वह कुछ कमाता नहीं है जिस कारण घमण्ड करने का उसके पास कोई कारण नहीं है। उसके पास उसके अनुग्रह में जो मसीह के क्रूस में दिखाया गया है आनन्द करने का केवल एक कारण है।

इब्रानियों 11 की परमेश्वर की ''विश्वास के सम्मान की सूची'' में यह बात अच्छी तरह बताई गई है। पुराने नियम के पात्रों ने अपने विश्वास को आज्ञापालन में दिखाया था। हाबिल ने भेंट दी, हनोक ने उसे प्रसन्न किया, नूह ने जहाज़ बनाया, अब्राहम ने आज्ञा मानी और बलिदान भेंट किया और मूसा ने एक पसन्द चुनी। यही तो विश्वास है जो उसे स्वीकार करता है जिसे अनुग्रहपूर्वक परमेश्वर देने की पेशकश करता है। यानी वह विश्वास जिसमें यकीन, भरोसा और आज्ञापालन है।

आयत 10. आयत 8 की तरह पौलुस ने **क्योंकि** का इस्तेमाल अभी-अभी कही गई बात के साथ अपने विचार को मिलाने के लिए किया। मनुष्य उद्धार को अपनी खूबियों के कामों से चाहे कभी कमा नहीं सकता है पर पौलुस ने मसीही लोगों को स्मरण दिलाया कि वे परमेश्वर के **बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए** हैं। यह बात और संकेत देती है कि उद्धार परमेश्वर की ओर से दान है न कि मनुष्य के कर्मों के द्वारा कमाई गई कोई चीज़ जिसके कारण घमण्ड किया जा सके। उद्धार पाए हुए लोग ''मसीह यीशु में भले कामों के लिए सृजे गए'' थे। इस कारण ऐसे कामों से उद्धार नहीं हो सकता था। इसके बजाय उनका उद्धार उनके बपतिस्मे के समय में मसीह में प्रवेश करने पर उन्हें दिया गया था।

परमेश्वर ने आरम्भ में संसार को बनाया और संसार उसकी कारीगरी है। अब परमेश्वर ने ''मसीह में'' बनाया है और हम उसकी कारीगरी हैं। मसीह में यह सृष्टि प्रशंसात्मक है जिसमें परमेश्वर ने पापियों को उनके पापों से बचाकर नये बनाया है। 2 कुरिन्थियों 5:17 में पौलुस ने कहा, ''यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है।'' बाद में अध्याय 2 में उसने मसीह में यहूदियों और अन्यजातियों के सम्बन्ध में परमेश्वर की इसी कार्य की बात की जब पौलुस ने कहा कि ''दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न [या रचित] करके मेल करा दे'' (2:15)। 4:24 में पापियों के उद्धार को दर्शाने के लिए यूनानी शब्द (*ktizō*) का इस्तेमाल हुआ है। मनुष्य को दिया गया परमेश्वर का दान उद्धार है। इस वचन में उद्धार का माध्यम मसीह में परमेश्वर का सृजनात्मक कार्य है, और हमारे उद्धार का उद्देश्य यह है कि हम भले काम कर सकें।

जिस प्रकार से संसार की परमेश्वर की सृष्टि का माध्यम मसीह था (यूहन्ना 1:1-3; इब्रानियों 1:2; कुलुस्सियों 1:16), इसी प्रकार वह नये मनुष्य की परमेश्वर की सृष्टि का भी माध्यम है। इस नये मनुष्य को ''भले कामों के लिए'' बनाया गया था। मसीह में रहने वालों के जीवन भले कामों के द्वारा जाने जाने चाहिए। सच तो यह है कि भले काम नई सृष्टि का उद्देश्य, परिणाम या लक्ष्य है। इसलिए योग्यता के भले काम चाहे पापियों का उद्धार नहीं कर सकते हैं, परन्तु विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार पाने वालों का आचरण प्रेम में किए गए भले कामों से विश्वास की प्रामाणिकता को दिखाने वाला होना चाहिए (गलातियों 5:6)। जिस प्रकार से आरम्भ में परमेश्वर को जवाब देने वाला विश्वास आज्ञा पालन के कामों के द्वारा दिखाया जाता

है (देखें याकूब 2:17), वैसे ही मसीह में विश्वास करने वालों द्वारा दिखाया गया विश्वास भले कामों के द्वारा प्रामाणिक होता है। यही विश्वास तीतुस 3:5, 8 में मिलता है। वहां पर पौलुस ने घोषणा की कि परमेश्वर ने विश्वासियों का उद्धार अपनी दया के कारण किया, न कि मनुष्य के कर्मों के कारण, परन्तु उद्धार पाए हुओं को भले कामों में बने रहने के लिए चौकस रहना चाहिए।

पौलुस उन ''भले कामों'' की बात कर रहा था जो **जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे परखने के लिए तैयार किया।** परमेश्वर संसार का आरम्भ होने से भी पहले मसीह में विश्वास को देख सकता था (1:4)। इसी प्रकार से उसने मसीह में नया जीवन जीते हुए अपने लोगों के सदाचारी और नैतिक व्यवहार को पहले से देख लिया।

परमेश्वर ने ''भले कामों'' को लोगों को उद्धार देने के लिए भविष्य के भाग के रूप में देखा; उद्धार पाए हुओं के रूप में हमारे उद्देश्य का भाग ''उन्हें करना'' है। भले काम करने की क्षमता परिश्रमों द्वारा अनन्त योजना में डाली गई थी और इस योजना का पूरा होना उद्धार पाए हुए लोगों की बदली हुई जीवन शैली में देखा जाना था। भले काम करने का निश्चय करना उस निर्णय का भाग है जिसे अपने जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिए हमारे लिए आवश्यक है।

प्रासंगिकता

क्रूस के ऊपर—करुणामय परमेश्वर (2:4-12)

''परन्तु परमेश्वर'' शब्दों से इस संसार में सारा फर्क पड़ जाता है। हमें उम्मीद रही हो सकती है कि आयत 4 का आरम्भ ''और परमेश्वर ने उन सब को दण्ड दिया'' या ''और परमेश्वर ने उन में से हर एक का नाश कर दिया'' शब्दों के साथ आरम्भ होती है। इसके विपरीत पौलुस ने परमेश्वर के करुणामय प्रभाव की बात कही।

*''दया का धनी।''*परमेश्वर केवल दयालु ही नहीं बल्कि वह दया का धनी है। वह दया में धनवान है। दया उसे जिसके हक्कदार हो रोकना चाहती है। पापी लोग विनाश के हक्कदार हैं परन्तु परमेश्वर की दया विनाश को रोकना चाहती है।

*''उसका बड़ा प्रेम।''*इसलिए परमेश्वर पापियों पर अपनी दया करना चाहता है। वह सब पापियों से बड़े प्रेम के साथ प्रेम करता है।

*''अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है।''*परमेश्वर का अनुग्रह उसका ''अनार्जित, अपात्र, बिना कमाया हुआ समर्थन'' है। परमेश्वर पापियों को वह देना चाहता है जिसके वे कभी योग्य नहीं हो सकते हैं। इन सच्चाइयों पर ध्यान दें: न्याय वही देता है जिसके कोई योग्य हो, जबकि परमेश्वर जो की धनी है पापियों को खो जाने देगा; दया उसको रुकवाना चाहती है जिसके कोई योग्य है, और परमेश्वर दयालु है; और दया किसी को वह देती है जिसके वह कभी योग्य नहीं हो सकता। हर व्यक्ति के लिए यह चुनना आवश्यक है कि उसे पाप में रहकर परमेश्वर के विशुद्ध न्याय को पाना चाहिए, जो की मृत्यु है, या मसीह में दिए जा रहे परमेश्वर के प्रेम, दया और अनुग्रह को स्वीकार करके उद्धार पाना है। जब तक कोई पापी विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार नहीं पाता है तब तक वह मसीह से अलग और परमेश्वर के बिना है (2:12)।

जे लॉकहर्ट

उसके अनुग्रह की ट्रॉफियां (2:1-10)

खेलों में चैंपियन बनने वालों को अक्सर ट्रॉफियां, रिबन या मैडल दिए जाते हैं। यह पुरस्कार उनकी प्राप्ति की पहचान होते हैं और इन से इन्हें पाने वालों का सम्मान बढ़ता है। यह पुरानी परम्परा कम से कम प्राचीन ओलंपिक गेमों जितनी पुरानी है, जिससे पौलुस के पाठक परिचित थे (देखें 1 कुरिन्थियों 9:24; 2 तीमुथियुस 2:5)। यह चौंकाने वाला लग सकता है परन्तु परमेश्वर के पास भी अपनी ट्रॉफियां हैं। इफिसियों 2:1-10 में हमें उनके बारे में पता चलता है।

हमारा अतीत। पौलुस चयन, छुटकारे और मिरास में जो कुछ परमेश्वर ने हमारे लिए किया है उसे बता रहा था। परन्तु जब तक हमें इस्राएल के परमेश्वर के सामने अपनी स्थिति समझ नहीं आती तब तक हम कभी भी यह समझ नहीं पाएंगे कि परमेश्वर ने हमारे लिए क्या किया है। यह "बुरी खबर" है जो हमें मसीह में "अच्छी खबर" के लिए तैयार करती है। हमारे अतीत की चर्चा करते हुए पौलुस ने उन चार विशेष बातों को रखा जो हम में से हर किसी पर लागू होती थीं।

1. हम मरे हुए थे (2:1)। स्पष्टतया वह हमारी शारीरिक देहों की बात नहीं कर रहा था बल्कि वह हमारी आत्माओं की बात कर रहा था। भीतरी मनुष्य मरा हुआ है। आदम में जब अदन की वाटिका में फल खाया तो उसकी आत्मा का परमेश्वर के आत्मा के साथ निकट सम्बन्ध टूट गया। उसी तरह ही, पाप के कारण हम सब आत्मिक रूप में मर जाते हैं।

मरे हुए व्यक्ति को सबसे अधिक किस चीज़ की आवश्यकता होती है? उसे जीवन की आवश्यकता है! मसीह ने कहा, "और जो कोई जीवन है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा" (यूहन्ना 11:26)। मृत्यु वास्तव में आत्मा का शरीर से अलग होना नहीं बल्कि आत्मा का परमेश्वर से अलग होना है। अनन्त जीवन केवल सदा तक जीवित रहना नहीं है। नरक में जाने वाली आत्माएं सदा तक जीवित रहेंगी। यूहन्ना 17:3 कहता है, "अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा, जाने।"

सच्चा जीवन मसीह को जानने और उसके साथ महत्वपूर्ण सम्बन्ध में होने से मिलता है। हमारे नगर में मरे हुए लोगों की भरमार है; वे मरे हुए इसलिए हैं क्योंकि उनका मसीह के साथ जो कि जीवन का एकमात्र देने वाला है, कोई सम्बन्ध नहीं है।

2. हम अधीन थे (2:2)। आकाश के अधिकार का हाकिम कौन है? शैतान, बेशक। वह उन पुरुषों और स्त्रियों का वर्तमान तानाशाह है जो पृथ्वी पर आत्मिक मृत्यु में चलते हैं।

गली का आम आदमी बहस करेगा, "मैं अधीन नहीं हूं। मैं जो चाहूं वह करने को स्वतन्त्र हूं।" वह जो चाहे उसे करने को स्वतन्त्र है; दिक्कत यह है कि वह उस काम को नहीं करना चाहता जो सही है।

शैतान ने लोगों के घरों पर नियन्त्रण किया हुआ है और उनकी सोच को भरमाया हुआ है कि वे स्वतन्त्र हैं, जबकि वास्तव में वे पाप के दास हैं।

3. हम आज्ञा न मानने वाले थे (2:2)। आज्ञा न मानने वाला मन बाद में मनुष्य की मूल समस्या थी। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को पसन्द चुनने के लिए भेज दिया और उन्होंने परमेश्वर का विरोध करना चुना। लोग तब से विद्रोही आज्ञा न मानने में जीवन बिता रहे हैं।

परमेश्वर कहता है, ''अपने पड़ोसी से प्रेम रखो,'' पर लोग एक-दूसरे से घृणा करते हैं। परमेश्वर कहता है, ''अपनी पत्नी के साथ वफ़ादारी कर,'' पर लोग अपनी पत्नियों को धोखा देते हैं। परमेश्वर कहता है, ''पहल मुझे दो,'' पर लोग परमेश्वर को बचा खुचा देते हैं। मनुष्य का रिकॉर्ड आज्ञा न मानने वाले का है।

4. हम दोषी थे (2:3)। अपने दुष्ट मार्गों के कारण, यह जानते हुए कि सही क्या है जान-बूझकर आज्ञा न मानने के कारण, हम परमेश्वर के क्रोध के अधीन थे। हम शुद्ध और संसार के पवित्र प्रेम के सामने बिना किसी संदेह के दोषी थे। परमेश्वर के न्याय की मांग को पूरा करने के लिए हम अनन्तकाल तक उससे दूर दण्ड पाए हुए खड़े थे। अपने कामों और निर्णयों से हम आशा रहित और अपने ही भयदायक भविष्य से बचने के किसी धन के बिना थे!

हमारा वर्तमान। जो हमने अपने कामों के द्वारा अपने लिए किया है, वह बुरी खबर है। फिर पौलुस हमें हमारी दुविधा में से निकालने के लिए उस अच्छी खबर की ओर ले गया जो परमेश्वर ने हमारे लिए किया है। यहां उस पर ज़ोर नहीं है जो अपने उद्धार के लिए हम ने किया है बल्कि इस में उस पर जोर है जो परमेश्वर ने किया है।

1. हम जी उठे हैं (2:4, 5)। जब कोई मुर्दा व्यक्ति जीवित हो जाता है तो यह अनुग्रह के द्वारा होता है। वह अपने लिए क्या कर सकता है? कुछ भी नहीं। उसके लिए किसी को कुछ करना पड़े। इसी कारण उद्धार अनुग्रह से है। यदि परमेश्वर ने मनुष्य के लिए उद्धार उपलब्ध नहीं कराया होता तो यह मिल ही नहीं सकता था।

किसी मुर्दे को जीवन कैसे मिल सकता है? क्या *उदाहरण* के द्वारा हो सकता है? क्या हम लाश के सामने भागकर या कूदकर कह सकते हैं, ''हम जीवित लोग इस प्रकार से करते हैं''? नहीं, अच्छा उदाहरण मुर्दे की समस्या को सुलझाने के लिए काफ़ी नहीं है! आत्मिक रूप में मरे हुए व्यक्ति को बदलने के लिए भी यह काफ़ी नहीं है।

वातावरण से कुछ हो सकता है? हम उसे किसी अच्छे नगर में ऐसे लोगों के पास जा सकते हैं जो समृद्धि में रहना जानते हों। परन्तु इससे भी उसका प्राण नहीं लौटेगा।

एक और विकल्प *प्रोत्साहन* है जिसके लिए प्रयास किया जा सकता है। हम उसके साथ बात कर सकते हैं। कोई प्रसिद्ध प्रेरणादायक वक्ता आकर उसे चुनौती दे सकता है: ''उठ! तू उठ सकता है! सकारात्मक सोच रख!''

इन में से कोई भी ढंग सफ़ल नहीं होगा। मुर्दे के लिए जिस बात की आवश्यकता है वह जीवन! हमारी वास्तविक समस्या को ईश्वरीय पुनरुत्थान से कम कोई बात सुलझा नहीं सकती। परमेश्वर को नीचे आकर हमारी आत्माओं में रहना आवश्यक है। मसीह ने कहा, ''जीवन मैं हूं'' (यूहन्ना 11:25)। मुर्दों को मसीह की अत्यधिक आवश्यकता है।

मसीहियत बीमार व्यक्ति का चंगा होना नहीं है। यह मुर्दे को प्राण डल जाना है। परमेश्वर के अनुग्रह के ढंग से हम नये जीवन के मानने वाले लोग हैं। हमें मसीह के साथ मरे हुओं में से जिलाया गया है।

2. हमें विश्राम दिया गया है (2:6)। बाइबल में बैठने का विचार पूरा हो चुके काम को दर्शाता है। उदाहरण के लिए इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने लेवीय याजकों की सेवकाई के ऊपर यीशु की सेवकाई को दिखाने का संकेत किया: ''हर एक याजक तो खड़े होकर प्रति दिन

सेवा करता है, और एक ही प्रकार के बलिदान को जो पापों को कभी भी दूर नहीं कर सकते; बार-बार चढ़ाता है। पर [मसीह] तो पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिए चढ़ाकर परमेश्वर के दाहिने *जा बैठा*'' (इब्रानियों 10:11, 12)।

उद्धार दिलाने का यीशु का काम क्रूस पर पूरा हो गया था। जिस कारण वह परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठ गया। हमारे छुटकारे और मीरास को सुरक्षित रखने के लिए उसके लिए करने को कुछ नहीं रह गया था। छुटकारे का उसका काम पूरा हो गया और अब वह हमारे अनन्त जीवन को खरीदने से विश्राम कर सकता है।

पौलुस ने घोषणा की कि अब हम स्वर्गीय स्थानों में यीशु के साथ बैठे हैं। हमें स्वर्ग में अपना स्थान सुरक्षित रखने की आपे से बाहर होकर कोशिश करने की आवश्यकता नहीं है। यीशु में अनन्त जीवन पहले ही हमें मिल चुका है। हम उस में विश्राम करते हैं जो बहुत पहले पुकार उठा था, ''पूरा हुआ है!'' परमेश्वर के अनुग्रह से हमारा उद्धार क्रूस पर सुरक्षित किया गया है।

हमारे लिए सम्भावना। हमारे उद्धार का काम पूरा हो गया, हम परमेश्वर की ट्रॉफियां बन गए: ''कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आने वाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए'' (2:7)। अनन्तकालिक भविष्य के आने वाले युगों में, छुड़ाए हुए लोग स्वर्गीय सेनाओं के सामने परमेश्वर के अद्‌भुत अनुग्रह की ट्रॉफियों के रूप में रखे जाएंगे। स्वर्गदूत परमेश्वर के अनुग्रह की अत्यधिक महानता को देखकर चकित होंगे। वे भय में खड़े होंगे कि हमारा पवित्र परमेश्वर हम जैसे अपवित्र लोगों को बचाने के लिए भी मार्ग निकाल सकता है (प्रकाशितवाक्य 7:9-12)।

1. परमेश्वर की योजना (2:8, 9)। यदि हम परमेश्वर को महिमा देने के लिए अनन्त प्रदर्शन बनना चाहते हैं तो उसके पास हमारे उद्धार को पूरा करने की योजना होनी आवश्यक है जिस पर कोई घमण्ड न कर सके। उसकी योजना क्या है? पौलुस ने कहा, ''क्योंकि विश्वास के द्वारा *अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ* है, और यही तुम्हारी ओर से नहीं, बरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे'' (2:8, 9)।

अनुग्रह से उद्धार होने का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है कि परमेश्वर को किसी का उद्धार करने की आवश्यकता नहीं थी। वह हमें मरने देकर अनन्तकाल के लिए नरक में जाने दे सकता था और इसके बावजूद वह पवित्र ही रहता। वह हम से प्रेम करता है इस कारण उसने हमारे लिए स्वेच्छा से वह करना चुना जिसे करने का वह देनदार नहीं था। अनुग्रह परमेश्वर के मनुष्य के लिए स्वेच्छा से वह करने का निर्णय लेने का परिणाम है जो मनुष्य अपने लिए नहीं कर सकता था।

इसकी एकमात्र शर्त आज्ञाकारी विश्वास दिखाना है। हमें यह विश्वास करते हुए कि जब हम उस योजना को आज्ञा मानते हुए मानते हैं तो परमेश्वर हमें क्षमा करके हमें नया जीवन दे देगा, उद्धार की परमेश्वर की योजना को स्वीकार करना आवश्यक है।

यह योजना क्या है जो परमेश्वर हम से चाहता है कि हम इसे स्वीकार करें? यह वही है जो पिन्तेकुस्त के दिन बताई गई थी जब पतरस के द्वारा पहली बार सुसमाचार सुनाया गया था: ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38)।

परमेश्वर की योजना उसके अनुग्रह से ढाली गई थी। हमारे जीवनों में यह वास्तविकता तब बनती है जब हम इसे विश्वास के द्वारा मानते हैं।

2. परमेश्वर की मंशा (2:10)। उस समय की राह देखते हुए जब हमें परमेश्वर के अनुग्रह की ट्रॉफियों के रूप में रखा जाएगा, हमें क्या करना होगा? ''क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया'' (2:10)।

हमारा उद्धार अच्छे कामों से नहीं हुआ। कलीसिया में उपस्थिति, हर हफ्ते प्रभु भोज में भाग लेना, दस आज्ञाओं को मानना, अच्छे पडोसी बनना, नैतिक, आदरणीय जीवन जीना हमें स्वर्ग में नहीं ले जाएगा।

परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर नहीं चाहता कि हमारे काम अच्छे हों। आयत 10 बताती है कि हमारा उद्धार अनुग्रह से हुआ है ताकि हम भले काम कर सकें। इफिसियों 4—6 में पौलुस ने उन भले कामों की बात बताई जो हमें करने हैं, जो हमें अपने समाज में चल रहे मुर्दा लोगों से अलग करेंगे। परमेश्वर हमें नया जीवन इसलिए नहीं देता है कि हम जैसे चाहें जी सकते हैं। वह हमें नया जीवन देता है ताकि हम उसे महिमा दें। अपने अनुग्रह की ट्रॉफियां बनाने के लिए हमें चुनने का उसका यही कारण है।

सारांश। अन्ततः, हर कोई किसी न किसी की ट्रॉफी बनेगा। जो लोग परमेश्वर का विद्रोह करते रहते हैं और यह जीवन पाप में मरे हुए बिता देते हैं वे शैतान के कपटों की ट्रॉफियों के रूप में नरक में अनन्तकाल तक रहेंगे। इसके विपरीत विश्वास में मसीह की बात मानने वाला व्यक्ति परमेश्वर के सुझाव दिलाने वाले अनुग्रह की अनन्त ट्रॉफी बन जाता है।

क्रिस बुलर्ड

टिप्पणियां

[1]केन्नथ एस. *वुएस्ट, वुएस्ट'स वर्ड स्टडीज़ फ्रॉम द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट फॉर द इंग्लिश रीडर: इफिसियंस एंड कोलोसियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1953), 65. [2]विलियम बार्कले, *मोर न्यू टैस्टामेंट वड्‌र्स* (न्यू यॉर्क: हार्पर एंड ब्रदर्स, 1958), 11–24. [3]वही, 21. [4]*वुएस्ट,* 66. [5]स्पायरस ज़ोडिएट्स, सम्पा., द *कम्पलीट वर्ड स्टडी न्यू टैस्टामेंट,* 2रा संस्क. (चटनूगा, टैनिसी: एएमजी पब्लिशर्स, 1992), 967. [6]एंड्रयू टी. लिंकोन, *इफिसियंस,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 42 (डलास: वर्ड बुक्स, 1990), 110. [7]वही। [8]एथलबर्ट डब्ल्यू. बुलिंगर, *ए क्रिटिकल लैक्सिकन एंड कन्कॉर्डैंस टू द इंग्लिश एंड ग्रीक न्यू टैस्टामैंट* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, तिथि नहीं; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, रिजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, 1975), 95. [9]सी. जी. विल्के एंड विलिबल्ड ग्रिम, *ए ग्रीक–इंग्लिश लैक्सिकन आ.फ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. एवं संशो. जोसेफ हेनरी थेयर (एडिनबर्ग: टी. एंड टी. क्लार्क, 1901; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 511; वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक–इंग्लिश लैक्सिकन आ.फ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियंस लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकॉगो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 816–18 भी देखें।